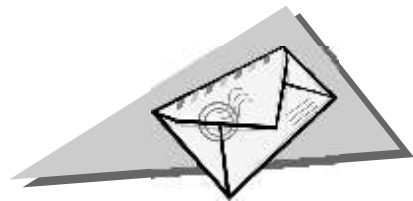


आपके पत्र



संपादक जी,

आपका पिछला अंक पढ़ा। शराब के बारे में जानकारी बहुत काम की थी। आजकल सामाजिक मेल मिलाप में महीने में दो-तीन बार शराब पीने में आ ही जाती है। इस जानकारी के बाद भी अपराध भावना कम हो जायेगी। श्री मनोरिया जी की कविता भी गजब की रही। मैं भी अपनी मधुमेह के लिये योग को अपना चुका हूँ, पर मेरा भी अनुभव यही है कि कुछ होता जाता नहीं है।

– रवि रमन शर्मा, भोपाल

संपादक महोदय,

श्री मनोरिया जी की कविता काबिले तारीफ है और लोगों की आँखें खोल देने वाली है। भारतीय मानस बड़ी जल्दी ऐलोपैथी के विकल्पों से प्रभावित हो जाता है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि वाकई बीमार के लिये तो ऐलोपैथी ही सहारा है, बाकी सब चीजें ठीक-ठाक सेहत वालों के चोंचले हैं। नयी दवाओं के ऊपर कैसे शोध होता है जानकर ऐलोपैथी में मेरा विश्वास और भी बढ़ गया है।

– सुरेश चन्द्र जैन, विदिशा

संपादक जी,

लगभग साल भर से आपकी पत्रिका पढ़ रहा हूँ। जितनी जानकारी मुझे डॉयबिटीज़ के बारे में "मधुमेह वाणी" से मिली वह कहीं से नहीं मिल सकती। मैंने भी वज़न कम करने व शुगर नियंत्रण के लिये योग को आजमाया परंतु कोई सफलता नहीं मिली। मैं सोचता था यह मेरे साथ ही है परंतु यह जानकर आश्चर्य है कि आपके अन्य पाठकों की भी यही राय है। अंकुरित अनाज पर डॉ. अमिता सिंह की जानकारी भी बहुत अच्छी है। अंकुरित दालों को आसानी से नियमित नाश्ते में लिया जा सकता है।

– विनायक पाटिल, नागपुर

संपादक महोदय,

पैरों की बायपास ऑपरेशन पर जानकारी पढ़ कर अच्छा लगा। कोई तीन वर्ष पहले मेरा यही ऑपरेशन करवाना पड़ा था, जिसके बाद अब मुझे कोई दर्द नहीं है। ऑपरेशन के पहले पचास फुट चलने पर ही मैं दर्द के मारे पैर पकड़ कर बैठ जाता था। मैं सोच ही रहा था कि अब तक आपकी पत्रिका में इस पर क्यों नहीं लिखा गया और आपने पिछले अंक में यह लेख दे दिया।

आपकी पत्रिका की जिनती तारीफ करूँ कम ही होगी। हम जैसे लाखों डायबिटीज के मरीजों के लिये तो यह वरदान है। मैं "मधुमेह वाणी" की निरंतर प्रगति की दुआ करूँगा।

— शांति भूषण माथुर, नई दिल्ली

संपादक जी,

श्री प्रमोद ताम्बट जी का व्यंग्य पसंद आया। हम मधुमेही खून से तो मीठे होते हैं, यदि थोड़ा मीठापन अपने व्यवहार में भी ले आयें तो बड़ा भला हो जाये। इस बार के चुटकुले भी जोरदार थे। डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा का लेख "बचें स्वचिकित्सा से" बहुत ही संतुलित व प्रभावशाली था। आज हर दूसरा आदमी अपने को डॉक्टर समझता है और खुद ही क्या परिवार वालों और दोस्तों का इलाज करने से नहीं चूकता। ऐलोपैथी दवाईयाँ आसानी से बिना डॉक्टरी नुस्खे के मिल जाती हैं।

कुल मिलाकर यह अंक बहुत अच्छा रहा। आपकी पत्रिका का यही अंदाज़ बनाये रखें यही प्रार्थना है।

— शमशेर सिंह डाँगी, ललितपुर (उ.प्र.)

संपादक महोदय,

मैं मधुमेहवाणी का नियमित पाठक हूँ। 20 05 जून में फतेहपुर उ.प्र. के रेलवे स्टेशन के बुक स्टाल में मैंने यह पत्रिका देखी तुरंत खरीदकर पढ़ा, बहुत ही उपयोगी पत्रिका लगी। विशेषकर मेरे लिये क्योंकि मैं टाईप-2 व मेरी 12 वर्षीया पुत्री टाईप-1 बाल मधुमेही है। मैं डाक से आपकी यह पत्रिका नियमित मँगाता हूँ। इस पत्रिका से मधुमेह संबंधी जानकारी व नये शोध व खोज आदि की जो जानकारी मिल रही है अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। अक्टूबर/नवम्बर 20 06 के अंक में हायपोग्लायसीमिया की जानकारी मिली। उपरोक्त सभी जानकारियों के लिये बहुत-बहुत साधुवाद। भविष्य में हमें नई जानकारियाँ मिलती रहें और यह पत्रिका देश के कोने-कोने में फैल जाये ताकि सभी मधुमेहियों को उचित जानकारी मिले।

प्रथम राष्ट्रीय टाईप-1 मधुमेह सम्मेलन जो कि 27-28 जनवरी 20 07 को कानपुर में हुआ पत्रिका के विलम्ब से पहुँचने के कारण जानकारी के अभाव में हम न आ सके। मेरी 12 वर्षीय पुत्री टाईप-1 (बाल मधुमेही) है, को उक्त सम्मेलन में मैं जरूर लाता। भविष्य में ऐसे सम्मेलनों की जानकारी पत्रिका के माध्यम से अवश्य दें। डाक/कोरियर द्वारा पत्रिका कैसे सरलता से हम तक पहुँचे विस्तृत जानकारी अवश्य देने की कृपा करें।

— वरुण कुमार शुक्ल

सुल्तानपुर पट्टी, जिला-उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड